GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

ऋग्वेद और अथर्ववेद में राष्ट्र-निर्माणभावना

डॉ.नरेश वणझारा
आसि. प्रोफेसर
संस्कृत विभाग,
श्री एन.के.महेता एन्ड श्रीमती एम.एफ.दाणी,
आर्ट्स कॉलेज, मालवण (महिसागर).

प्रस्तावना

वेद विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। वेद समस्त ज्ञान का मूल है, इसीलिए इसे प्राचीन भारतीय साहित्यिक वट वृक्ष की जड़ कहा जाता है। भारतीय संस्कृति की जड़ें वेदों में हैं। वेद ज्ञान का अक्षय स्रोत हैं। वेदों में इतिहास, धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति, नैतिक आचरण, मानवजीवन के मूल्य, आयुर्वेद, राष्ट्रनिर्माण आदि सभी क्षेत्रों का ज्ञान समाहित है, अतः वेदों की उपयोगिता का निर्विवादरुप से स्वीकार किया गया है। इसीलिए 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' उक्ति यथार्थ है। नैतिकमूल्यों के स्थान पर भौतिकसमृद्धि के बढ़ते महत्व के कारण आज विश्व के विभिन्न राष्ट्र भ्रष्टाचार, आतंकवाद, युद्ध जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। अत :नैतिक मूल्यों के ह्रास के साथ-साथ राष्ट्रीय भावना का भी ह्रास होता देखा जा रहा है। वेदों में निहित ज्ञान मनुष्य एवं समस्त विश्व के कल्याण के लिए उपयोगी एवं आवश्यक है। वेदों में वैश्विक समस्याओं का समाधान निहित है, और वेद इन समस्याओं का समाधान सुझाकर चरित्रनिर्माण एवं राष्ट्रनिर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वेद मानवजीवन के कल्याण का खजाना हैं, जिनमें मानवजीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं व्यवस्थाओं को प्रस्तुत करने वाले अनेक सूक्त एवं मंत्र समाहित हैं। वेदों में राष्ट्रनिर्माण के निर्देश दिये गये हैं। ऋग्वेद और अथर्ववेद में राष्ट्रनिर्माण संबंधी निर्देश निहित हैं।

राष्ट्रनिर्माण की वैदिक संकल्पना

राष्ट्र शब्द एक सुनिर्दिष्ट अर्थ एवं भावना का प्रतीक है। राष्ट्र शब्द का प्रथम प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है। संस्कृत भाषा की व्याकरणिक प्रकृति और प्रक्रिया पर विचार करने से यह स्पष्ट है कि 'राष्ट्र' शब्द की उत्पत्ति 'दीप्त्यर्थक' 'राज्' धातु से हुई है, जिसमें औणादिक 'ष्ट्रन्' प्रत्यय जोड़ा गया है। इसका मतलब है

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

सर्वत्र शोभायमान जनसमूह।[1] इस शोभायमान जनसमूह के नैतिक आचरण, उदार धार्मिक भावना, सांस्कृतिक-आर्थिक तथा सामाजिक एवं भौगोलिक सम्बन्ध से राष्ट्र का निर्माण होता है।

समृद्ध राष्ट्र का आह्वान

ऋग्वेद और अथर्ववेद में राजा और प्रजा, राजा और प्रजा के कर्तव्य, राजा और प्रजा को मिलने वाले शुभ फलों और राष्ट्र का वर्णन है। राष्ट्राभिवर्धन)अथर्ववेद 1-29) सूक्त का प्रथम मन्त्र राष्ट्र के उत्थान अर्थात् समृद्धि का आह्वान करता है।

अभीवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
तेनास्मान् ब्रह्मणस्पते अभि राष्ट्राय वर्धय ।। [2]

शत्रुनाश और राष्ट्र-रक्षा

इसी सूक्त के दूसरे मंत्र में राष्ट्र की रक्षा के लिए शत्रुओं को परास्त करने की भावना व्यक्त की गई है।

अभिवृत्यं सपत्ना नभि या नो अरातयः ।
अभि पृतुन्यतन्त तिष्ठा भि यो नो दुरस्यति।। [3]

राजा राष्ट्रनिर्माण का महत्वपूर्ण अंग होता है। आधुनिक समय में राष्ट्र के मुख्य प्रशासक को राष्ट्र का राजा समझा जा सकता है। अथर्ववेद में राजाओं से संबंधित मंत्रों के माध्यम से राजा के कार्यों और कर्तव्यों का वर्णन किया गया है।

राष्ट्र का निर्माण राजा और प्रजा के सामूहिक प्रयास और निष्पक्ष आचरण से ही संभव है। राजा और प्रजा का भ्रष्ट आचरण राष्ट्रनिर्माण में बाधक है। राजा का भ्रष्ट आचरण राष्ट्र के विकास में बाधा बनता है और राष्ट्रनिर्माण में बाधक बनता है। अथर्ववेद यह विचार व्यक्त करता है कि राजा चंचलता से मुक्त होकर स्थिर बुद्धि प्राप्त करे।

राजा का आदर्श चरित्र

आ त्वाहार्षमन्तर भूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलत्।
विंशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मां त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्।। [4]

सुशासन राष्ट्रनिर्माण का मूल आधार है। अथर्ववेद के अनुसार सुशासन के लिए राष्ट्र के सचिव, राष्ट्र के कर्मचारियों, लोगों को राष्ट्रनिर्माण नीतियों के उचित कार्यान्वयन के लिए स्वयं को समर्पित करने की आवश्यकता होती है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

सुशासन एवं कर्मठ सचिव

ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये।
उपस्तीन् पर्ण मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान्।।[5]

राष्ट्र के विकास के लिए राजा द्वारा लिए गए निर्णय और योजनाएं राष्ट्र के सेवक, राष्ट्र सचिव के माध्यम से जनता तक पहुंचते हैं। इसलिए राजा का राष्ट्र के सचिव और राष्ट्र के कर्मचारियों पर प्रभुत्व आवश्यक है।

राजा का पराक्रम और मित्रता

अभि प्रेहि माप वेन उग्रश्चेत्ता सपत्नहा।
आ तिष्ठ मित्रवर्धन तुभ्यं देवा अधि ब्रुवन्।।[6]

उपरोक्त मन्त्र के अनुसार राजा शत्रुनाशक, मित्रों का हितैषी तथा पराक्रमी होता है। राजा को कर्म और अशुभ कर्मों का ज्ञान होता है। राष्ट्रनिर्माण में शत्रु बाधा उत्पन्न करते हैं। शत्रु देश और देश की जनता को हानि पहुंचाने का प्रयास करता है। एक राजा को राष्ट्रनिर्माण के लिए क्या करना चाहिए? और क्या नहीं एक राजा को राष्ट्र निर्माण के लिए क्या करना चाहिए? और क्या नहीं करना चाहिए? यह ज्ञान होना चाहिए। अनुचित कार्य का होना और उचित कार्य का अभाव राष्ट्र निर्माण में बाधक हैं।

दुश्चेष्टाओं का परित्याग

निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं निररातिं सुवामसि।
अथ या भद्रा तानि नः प्रजाया अरातिं नयामसि।। [7]

उपरोक्त मंत्र से मनुष्य दुर्भाग्य का संकेत देने वाली बुरी आदतों जैसे लालच, प्रलोभन, भ्रष्टाचार और अनैतिकता को दूर करे। अगली पीढ़ी भी इन दूषित पदार्थों से दूर रहें। जिससे लोगों का कल्याण हो ऐसी भावना व्यक्त की गई है।

राष्ट्रनिर्माण में विद्यार्थियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक युवा शिक्षार्थी राष्ट्र का भावी नागरिक है। यदि विद्यार्थी को अपने अध्ययन का शुभ फल नहीं मिलता है तो वह अनैतिकता के मार्ग पर आगे बढ़ जाता है और राष्ट्र के विकास को नुकसान पहुंचाता है।

विद्यार्थियों की राष्ट्रनिर्माण में भूमिका

उतदेवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतणश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः।।[8]

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

उपरोक्त मंत्र के अनुसार राष्ट्र के युवाओं को धर्म के पालन में सावधानी बरतनी चाहिए। विद्यार्थियों को अध्ययन का शुभफल मिले और सभी लोग शतायु बनें यह प्रार्थना की गई है।

तप और राष्ट्रबल

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।।[9]

उपरोक्त मन्त्र यह भावना व्यक्त करता है कि राजा तथा प्रजा तपस्या एवं दीक्षा द्वारा राष्ट्र को सुदृढ़ एवं तेजस्वी बनाये तथा राष्ट्र का निर्माण करें।

अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त)12-1) में मातृभूमि के रूप में राष्ट्र की विस्तृत आलोचना की गई है। पृथिवी सूक्त हमें एक स्वस्थ राष्ट्रीय पहचान विकसित करने में मदद करती है। इस सूक्त में मातृभूमि के प्रति प्रकट तीव्र प्रेम की आलोचना की गयी है। पृथिवी सूक्त में मातृभूमि के आठ गुण सत्य, विकास, शासन, तेज, निपुणता, तपस्या, ज्ञान और अच्छे कर्म बताये गये हैं।

पृथिवी सूक्त में राष्ट्र के गुण

सत्यं बृहद्दृतमुग्रं दीक्षा तप ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
स नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकों पृथिवीं नः कृणोतु।।[10]

उपरोक्त आठ गुणों से ही राष्ट्र की रक्षा होती है। यदि किसी राष्ट्र के लोगों में ईमानदारी, विकास, नियम का पालन, कार्यकुशलता, तपस्या, आध्यात्मिक ज्ञान, अच्छे कर्म करने की भावना हो तो वह राष्ट्र उन्नति की ऊंचाइयों पर पहुंचता है।

भाईचारे की भावना

अज्येष्ठासो अकनिष्ठासः एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपारुद्रं सुदुधा पृश्नि सुदिना मरुद्भ्यः।। [11]

ऋग्वेद के उपरोक्त मंत्र में जाति, वर्ण, भाषा, धर्म, संप्रदाय के भेदभाव से ऊपर उठकर भाईचारे के साथ प्रेमपूर्वक रहने की भावना व्यक्त की गई है। यह भावना राष्ट्र के विकास के लिए बहुत आवश्यक है।

समानता और एकता राष्ट्रनिर्माण का सबसे आवश्यक और प्रभावी हिस्सा है। ऋग्वेद के अंतिम सूक्त में राष्ट्रीय एकता का महत्व प्रतिपादित किया गया है। ऋग्वेद का अंतिम सूक्त आपसी घनिष्ठता और एकता की भावना को दर्शाता है, जो राष्ट्रनिर्माण के लिए आवश्यक है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

सामूहिकता और एकता

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।[12]

साम्प्रदायिकता, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी बुराइयाँ राष्ट्रनिर्माण में बाधक हैं। आपसी आत्मीयता, राष्ट्रीय एकता और मानव कल्याण की भावना के बिना राष्ट्रनिर्माण का सपना कभी सफल नहीं हो सकता। जब विभिन्न धर्मों, विभिन्न भाषाओं, विभिन्न जातियों के लोग एकजुट हो जाते हैं और समान आचरण करते हैं तो उस राष्ट्र के विकास को कोई नहीं रोक सकता।

मन की समता

समानी व आकुतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। [13]

ऋग्वेद का उपरोक्त मंत्र यह विचार व्यक्त करता है कि राष्ट्र के लोगों को असमानता की भावना को दूर करना चाहिए और एक-दूसरे के लिए हृदय और मन में समादर की भावना विकसित करनी चाहिए।

वर्तमान समय में राष्ट्रनिर्माण के लिए अहिंसा अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्र की अनेक समस्याएँ अहिंसा पालन न करने से उत्पन्न होती हैं। संपूर्ण राष्ट्र के सुखी जीवन के लिए अहिंसा आवश्यक है। महाभारत भी 'अहिंसा परमो धर्म'[14] कहकर अहिंसा के महत्व को दर्शाता है। किसी भी स्थिति में मन कर्म या वचन से किसी भी प्राणी को कष्ट न देना अहिंसा है। अहिंसा मानवसमाज में विद्यमान सभी बुराइयों को मिटा देती है। स्वार्थ और विद्वेष से ही हिंसा का आरंभ होता है। स्वार्थ और विद्वेष से दूर रहने का उल्लेख अथर्ववेद में किया गया है।

अहिंसा और शांति का मार्ग

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेष कृणोमि वः।
अन्योअन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्या।। [15]

ऋग्वेद में अहिंसक व्यक्ति का अनुसरण करने का उल्लेख किया गया है।

यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा।
अस्य प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे।।[16]

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

अर्थात बुद्धिमान व्यक्ति इस अहिंसक प्रिय मित्र की शरण में रहकर जिस गति को प्राप्त करते हैं, मैं भी इस अहिंसक मित्र के पथ से गति को प्राप्त करु।

उपसंहार

राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि नागरिक राष्ट्र के प्रति समर्पित हों, सामाजिक उत्थान के लिए सतत प्रयत्नशील हों, भौतिक-नैतिक जीवन संतुलित हो, नागरिकों में परस्पर आत्मीयता का भाव हो। इस राष्ट्र की रक्षा के लिए मार्गदर्शक तत्व वेदों में निहित हैं जो राष्ट्र के नागरिकों को राष्ट्र के उत्थान के लिए सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

सन्दर्भसूची:

1. संस्कृत साहित्यमे राष्ट्र भावना
2. अथर्ववेद 1-29-1
3. अथर्ववेद 1-29-2
4. अथर्ववेद 6-87-1
5. अथर्ववेद 3-5-7
6. अथर्ववेद 4-8-2
7. अथर्ववेद 1-18-1
8. अथर्ववेद 4-13-1
9. अथर्ववेद 19-41-1
10. अथर्ववेद 12-1-1
11. ऋग्वेद 5-60-5
12. ऋग्वेद 10-191-1
13. ऋग्वेद 10-191-4
14. महाभारत –अनुशासनपर्व अध्याय – 116-1
15. अथर्ववेद 3-30-1
16. ऋग्वेद 5-64-3

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. ऋग्वेद
   लेखक :डॉ .गंगा सहाय शर्मा
   प्रकाशक :संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -२०१६
2. अथर्ववेद
   लेखक :डॉ .गंगा सहाय शर्मा
   प्रकाशक :संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -२०१५
3. ऋग्वेद में आचार – सामग्री
   लेखक :सत्यप्रिय शास्त्री
   प्रकाशक :श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास,
   हिण्डौन सिटी, राजस्थान, संस्करण – २००६
4. अथर्ववेद – संहिता
   सम्पादक :पद्मभूषण पं .श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
   प्रकाशक - :वसंत श्रीपाद सातवलेकर, स्वाध्याय–मंडल, पारडी, जि .वलसाड
5. महाभारत – अनुशासनपर्व
   प्रकाशक - :वसंत श्रीपाद सातवलेकर, स्वाध्याय–मंडल, पारडी, जि .वलसाड
6. संस्कृत–साहित्य में राष्ट्रिय भावना
   लेखक :डॉ .हरिनारायण दीक्षित